International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2018; Page No. 08-10

प्रेमचंद के समकालीन उपन्यासों में ''गांधी दर्शन'' एक अध्ययन

रीना चौहान [1], डॉ. तबस्सुम अतहर [2]

[1] शोधार्थी, श्री सत्य साईं प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय पचामा, सीहोर, मध्यप्रदेश, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] शोध–मार्गदर्शक, श्री सत्य साईं प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय पचामा, सीहोर, मध्यप्रदेश, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

हिमालय सी उन्नत पूज्यनीय बापू जी के विचारों से प्रेरणा प्राप्त करने वाले उपन्यासकार प्रेमचंद का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। साथ–साथ समकालीन लेखकों तथा प्रेमचंदोत्तरकालीन उपन्यासकारों की सर्वग्राही दृष्टि ने भारत के रोम–रोम का साक्षात्कार कर लिया था। और वे अपनी कृतियों में भारतीय जन जीवन की धड़कन को व्यक्त करने लगे थे। यही कारण है कि सत्य, अहिंसा और प्रेम के मूल सिद्धांतों के साथ–साथ समाज सुधार की भावना, राजनीति में परिवर्तन, अछूतों की मंगल कामना, ग्राम सुधार की योजना आर्थिक विषमता की समस्या, नारी उद्धार आदि गांधी दर्शन के रचनात्मक सिद्धान्त हिन्दी उपन्यास साहित्य में स्थान ग्रहण करने लगे थे।

प्रेमचंद जी का गांधी जी के विषय में एक कथन देखने योग्य है

''मैं गांधी जी का बना–बनाया कुदरती चेला हूँ इसके मायने हैं कि दुनिया में महात्मा गाधी को सबसे बड़ा मानता हूँ उनका भी उद्देश्य यही है कि मजदूर और काश्तकार सुखी हों। वह इन लोगों को आगे बढ़ाने के लिए आन्दोलन चला रहे थे। मैं लिखकर उनको उत्साह दे रहा हूँ। महात्मा गांधी हिन्दू मुसलमानों की एकता चाहते हैं मैं भी हिन्दी और उर्दू को मिलाकर के हिन्दुस्तानी बनाना चाहता हूँ।''

''मेरी धारणा है कि प्रेमचंद के समस्त उपन्यासों का उद्देश्य केवल हिन्दुस्तान की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, पारिवारिक आदि समस्याओं को अपने उपन्यासों में प्रस्तुत करना रहा है।''[1] प्रेमचंदोत्तर युगीन उपन्यासों में अतिरिक्त बौद्धिकता एकाधिकार है। प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में गांधी दर्शन से प्रेरणा से भी दृष्टिगोचर होता है। ''हिन्दी उपन्यास को तिलस्म और ऐयारी से कल्पना के रंगीन लोक से निकालकर समाज के धरातल पर लाने के महत्वपूर्ण कार्य का एक मात्रश्रेय उपन्यासकार प्रेमचंदजी को है।

प्रेमचंद युगीन उपन्यास का लक्ष्य

गांधी दर्शन के प्रचार–प्रसार तथा प्रभाव के परिणाम स्वरूप प्रेमचंद युग में उपन्यास की दिशा में परिवर्तन आया। स्वयं प्रेमचंद ने इस नई दिशा में अपने चरण अग्रसर किये।

''मैं उपन्यास को मानव–चरित्र का चित्र–मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उनसे रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।''[2]

सौद्देश्य साहित्य सृजन करने की प्रेरणा के पीछे वस्तुतः प्रेमचंद का अपना विशिष्ट दृष्टिकोण एवं सुस्पष्ट लक्ष्य था उन्हीं के शब्दों में हम साहित्य को मनोरंजन एवं विलासिता की वस्तु नहीं समझते। वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें चिंतन हो स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाईयों का प्रकाश हो, जो हममें गति संघर्ष और बैचेनी पैदा करे।

उपन्यास में मानव जीवन का आलेखन ही उसकी सार्थकता का परिचायक है, इस तश्य को गांधी विचारधारा के प्रबल समर्थक प्रेमचंद ही नहीं मानते हैं, बल्कि हेनरी जेम्स तथा रॉल्फ फॉल्स भी मानव जीवन की अभिव्यक्ति में ही उपन्यास की उपयोगिता देखते प्रेमचंद के साथ साथ अन्य समकालीन उपन्यासकारों ने भी इस नई दिशा में प्रकाश कर श्रेष्ठ उपन्यासों की सृष्टि की।

प्रेमचंद तथा उनके सहयोगी उपन्यासकारों ने साहित्य में शिष्ट निरूपण किया हो।

उपन्यासों में गांधी दर्शन का निरूपण

भारत के दधीची ऐसे युग दृष्टा पू. बापू पीड़ित मानवता के उद्धारक थे। महात्मा जी के प्रभावशाली व्यक्तित्व और उनकी व्यापक विचारधारा ने हिन्दी उपन्यास साहित्य में युगांतकारी परिवर्तन उपस्थित कर एक सशक्त स्वस्थ परम्परा की नींव डाली है। गांधी दर्शन के प्रभाव का सम्यक अध्ययन करने के लिए प्रभावित लेखकों, उनकी कृतियों तथा विचारों से प्रभावित विभिन्न परिप्रेक्ष्यों पर दृष्टिपात किया

प्रेमचंद

उपन्यास सम्राट मुंशीप्रेमचंद कराहती मानवता के साहित्यकार थे। वे हिन्दी उपन्यास साहित्य में एक नये युग के पुरस्कर्ता हैं। उन्होंने दृढ़ साधना और अटूट लगन के परिणाम हैं। जो अमूल्य कृतियां हिन्दी साहित्य की है, उनसे हिन्दी साहित्य समृद्धिशाली बना है। हिन्दी साहित्य हमेंशा प्रेमचंद का ऋणी रहेगा।

प्रेमचंद जी गांधी दर्शन से अत्यधिक प्रभावित थे उन्होंने गांधी के विचारों को जनमन तक पहुंचाने के महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व को निभाया। गांधी युग की लगभग सभी समस्याओं का आलेखन प्रेमचंद साहित्य में उपलब्ध है।

प्रेमचंद का प्रथम उल्लेखनीय मौलिक और हिन्दी में उनके द्वारा अनूदित उपन्यास 'प्रेमा' अथवा 'प्रतिज्ञा' है। प्रतिज्ञा की रचना भले ही प्राक गांधी युग में हुई हो पर उसका वर्तमान रूप गांधी युग की देन है। जिस पर गांधी विचारधारा का प्रभाव यज–तज दिखाई दिया। 'प्रतिज्ञा' एक समाज सुधार करने वाला उपन्यास है। 'सेवासदन' वैश्या समस्या पर आधारित उपन्यास है। सुमन की पारिवारिक परिस्थितियों की पृष्ठभूमि देते हुए प्रेमचंद ने एक मध्यम वर्गीय ब्राह्मण परिवार की कन्याओं के विवाह और तत्संबंधी दहेज कुप्रथा के दुष्परिणाम दिखाने का प्रयत्न किया है। प्रेमचंद की सूझ–बूझ और भारत की जातीय और सम्प्रदायिक समस्याओं के बारे में उनके तलस्पर्शी दार्शनिक दृष्टि विलक्षण है।

'प्रेमाश्रय' में जमींदार किसान के संघर्ष को चिन्हित करने के साथ–साथ युग के सम्पूर्ण सामाजिक परिप्रेक्ष्य को भी समेट लिया

गया है।
इस दृष्टि से 'प्रेमाश्रय' एक व्यक्ति के जीवन की कविता न होकर सम्पूर्ण सामाजिक जीवन का महाकाव्य है। इसका प्रेरणास्त्रोत महात्माजी द्वारा आयोजित प्रथम असहयोग आन्दोलन की भूमिका है। स्वयं प्रेमचंद ने इस सम्बंध में शिवरानी देवी से कहा था कि –''गांधी जी राजनीति के माध्मय से भारत के किसानों और मजदूरों के सुखचेन के लिए जो प्रयत्न कर रहे हैं, 'प्रेमाश्रम' उन्हीं प्रयत्नों का साहित्यक रूपान्तर है।''[3]
'रंगभूमि' प्रेमचंद जी का अत्यधिक चर्चित उपन्यास है। उसकी न केवल पाठकों ने सराहना की वरन् स्वयं प्रेमचंद ने भी उसे अपना सर्व–श्रेष्ठ उपन्यास माना है। भारतीय ग्रामीण जीवन और नागरिक जीवन दोनों की दृष्टि से उपन्यास बहुत सफल रहा है। 'रंगभूमि' गांधीयुग की चरमोत्कर्ष अवस्था में लिखा गया उपन्यास है। इसमें सूरदास का सत्याग्रह महात्माजी के सत्याग्रह का आदर्श रूप है। सत्य, न्याय और धर्म के नाम पर संघर्ष करने वाले सूरदास की अवधारणा हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस उपन्यास में सत्य, अहिंसा, न्याय, ईश्वर–भक्ति सत्याग्रह आदि सिद्धांतों का सुंदर वर्णन हुआ।
'कायाकल्प' के विषय में इतना संकेत कर देना मात्र पर्याप्त होगा कि, विश्व साहित्य में गिनी जाने योग्य औपन्यासिक कृति के रूप में 'कायाकल्प' एक शाश्वत और उदात्त प्रेम की महान गाथा भी है। जिसे प्रेमचंद जी ने अपनी अद्भुत प्रतिभा से जन–जीवन के साथ जोड़ दिया है। रंगभूमि और गोदान के पश्चात कायाकल्प को ही उनकी सर्वोत्कृष्ट रचना मानी जाएगी। इसमें उपन्यासकार ने गांधीजी की आध्यात्मिक, नैतिक विचारधारा का प्रतिपादन किया है। साथ ही अपग्रिह, अस्तेय, संयम आदि के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।
कर्मभूमि की पृष्ठभूमि में गांधी जा का 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन की झलक भी इस उपन्यास में देखने को मिलती है।

वृन्दावन लाल वर्मा

उपन्यास जगत में डॉ. वृंदावनलाल असाधारण प्रतिभा के प्रतीक थे। सत्यान्वेषण उनके जीवन का लक्ष्य रहा है। वर्मा जी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार और विचारक थे इन्होंने प्रेमचंद युग से ही उपन्यास लिखना प्रारंभ किया।
वर्माजी का पहला उपन्यास 'गढ़कुंडार' की रचना की जिसने हिन्दी साहित्य जगत में धूम मचा दी। 'गढ़कुंडार' में राष्ट्रीय एकता के स्वर गूंज रहे हैं। 'प्रेम की भेट' में नारी के साहस तथा त्याग की महिमा का रूप चित्रित हुआ है।
'झांसी की रानी' में देश की स्वाधीनता तथा नारी की शक्ति का उज्जवल रूप देवीव्यमान है। वर्माजी के उपन्यास में गांधी जी के आदर्श समाज–निर्माण पर जोर दिया है तथा शोषण एवं अत्याचार के विरूद्ध जोरदार आवाज उठाई है। अचल मेरा कोई विधवा समस्या को लेकर लिखा गया पहला उपन्यास है। जिसमें गांधी विचारधारा के अनुरूप समाधान प्रस्तुत किये गये हैं।
सचमुच वर्माजी अनोखे व्यक्तित्व के धनी थे। उनके व्यक्तित्व की झॉकी शैवाल सत्यार्थी के शब्दों में ''प्रशस्त ललाट, अनुभव के गंभीर सागर सी गहरी–गहरी आंखें और नन्हें बालक सा सरल–सौम्य हृदय यह राष्ट्रभाषा हिन्दी के असाधारण व्यक्तित्व की रूप रेखा है, जो हमारे साहित्य उपवन का चिर नवीन साधक है। कालांतर में जाने कितने साधकों की साधनाओं के पुष्प मुरझा गये, परन्तु आज 70 वर्षों की अथक, अविकांत और अशेष तपश्चर्या के पश्चात भी वीणावादिनी मॉ सरस्वती के यावत चरणों में अर्पित जिनका पुष्प आज भी उतना ही सुवासित है और है सत्यं, शिवं, सुन्दरम का प्रतीक''[4]

यशपाल

यशपाल जैसे सशक्त, निर्भीक एवं साहसी साहित्यकार का व्यक्तित्व दोहरा है उन्होंने न केवल साहित्य की सेवा की, अपितु अनेक राजनैतिक एवं साहसिक कार्य कलापों द्वारा अपने सशक्त क्रांतिकारी व्यक्तित्व का भी परिचय दिया यशपाल बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे। प्रेमचंद के बाद दूसरे युगान्तरकारी उपन्यासकार यशपाल है जिन्होंने युग की महान समस्याओं को सुलझाने का बीड़ा उठाया। उन्होंने 'दादा कामरेड', 'देशद्रोही', दिव्या, 'पार्टी कामरेड', 'मनुष्य के रूप', 'अमिता' जैसे उपन्यास की भेंट हिन्दी साहित्य को दी है। 'दादा कामरेड' में भी गांधी जी के अहिंसात्मक आंदोलन का वर्णन हुआ है।
झूठा–सच में भी प्रकारांतर से गांधी दर्शन का प्रभाव देखा जा सकता है।

जैनेन्द्र कुमार

जैनेन्द्र कुमार भी गांधी दर्शन से प्रभावित उपन्यासकार हैं। जैनेन्द्र जी ने गांधी जी के विचारों को ग्रहण अवश्य किया है, पर गांधी जी के विचारों को ग्रहण करते समय उन्हें अपने विचारों के अनुरूप डालकर प्रस्तुत किया है परख, सुनीता उपन्यास में समस्याओं तथा संघर्षों का समाधान गांधी दर्शन के अनुरूप प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। 'सुखदा' में गांधी जी के बढ़ते हुए प्रभावों उल्लेख हुआ है। 'सुनीता' उपन्यास में नायिका सुनीता की समस्याओं तथा संघर्षों का समाधान गांधी दर्शन के अनुरूप प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

भगवती प्रसाद बाजपेयी

पं. भगवती प्रसाद बाजपेयी प्रेमचंदकालीन परम्परा के उपन्यासकार हैं। बाजपेयी ने प्रेमचंद के आदर्शोन्मुख, यथार्थवादी दृष्टिकोण को पूर्णतः अपनाया है।
'सत्य ही मनुष्य के जीवन का गुप्तधन है। 'पतवार' गांधी विचारों पर आधारित उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखक ने यह स्वीकार किया है कि ''स्थाई विश्वशांति और मनुष्य मात्र का कल्याण सत्य और अहिंसा द्वारा ही संभव है।''[5]

इलाचन्द जोशी

ऐसा प्रतीत होता है मानो गांधी विचारधारा से प्रभावित तो पहले से ही थे, परन्तु पहली बार 'मुक्तिपथ' में उन्होंने गांधी विचारानुसार मानवतावादी दृष्टिकोण की स्थापना की है। इसी उपन्यास में लेखक ने नारी, पुरूष की अकर्मण्यता के विरूद्ध अपनी आवाज उठाते हुए उन्हें समष्टिगत चेतना में अपने को लय कर देने, तथा सर्वोदय दर्शन एवं अहिंसा के प्रति आस्थावान रहने की प्ररेणा दी।

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'

उन्होंने समाज का यथातथ्य वर्णन मात्र करना उचित न समझकर उसकी आलोचना करना भी अपना कर्त्तव्य समझा। इनके उपन्यास 'दिल्ली का दलाल' में वैश्या समस्या है। 'बधुआ की बेटी' में नारी स्वातंत्र्य पर बल दिया। सामाजिक परिस्थितियों का ईमानदारी से निरूपण करने वालों में 'उग्र' जी का महत्वपूर्ण स्थान है।

जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के मूर्धन्य छायावादी कवि हैं। लोकिन उन्होंने 'ईरावती', 'कंकाल', 'तितली' उपन्यासों की भेट हिन्दी

साहित्य को दी है। कंकाल, उपन्यास में उपन्यासकार का उद्देश्य कुलीनता और धार्मिकता के खोखलें आदर्शों की ओट में छिपे अनाचार और पाखण्ड का पर्दा उठाया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार ''प्रेमचंद जी के समकालीन उपन्यासों में गांधी दर्शन'' एक अध्ययन करने के पश्चात यह निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि उपन्यासों में गांधी दर्शन के सभी परिप्रेक्ष्यों से प्रेरणा ग्रहण की है। और उनके प्रभाव को लेखनी वृद्ध किया है। गांधी दर्शन के अध्यात्मिक, धार्मिक विचारधारा के साथ साथ तत्कालीन सभी सामाजिक समस्याओं की ओर उस युग के जागरूक साहित्यकारों की दृष्टि गई थी उन्होंने उपन्यासों में समस्याएं भी उठाई गई हैं और समाधान भी गांधी जी के आदर्शों पर ही प्रस्तुत किये गये हैं।

सन्दर्भ

1. समस्यामूलक उपन्यासकार डॉ. महेन्द्र भटनागर 12
2. कुछ विचार प्रेमचंद 47
3. प्रेमचंद – घर में शिवरानी देवी 95
4. वृन्दावनलाल वर्मा व्यक्तित्व कृतिव डॉ. रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण 195
5. पतवार भगवती प्रसाद बाजपेयी भूमिका